प्रतिवेदन

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश विभाग द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर वेद और स्वामी दयानन्द विषय पर दिनाङ्क 15-16 फरवरी, 2024 को द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनाङ्क 15 फरवरी, 2024 को प्रातः दस बजे उद्घाटन सत्र का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि श्री अशोक प्रधान, निदेशक, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. शशिप्रभा कुमार, अध्यक्ष, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, प्रो. रमेश चन्द्र गौड़, डीन प्रशासन, आईजीएनसीए, प्रो. प्रतापानन्द झा, डीन अकादमिक, आईजीएनसीए आदि विद्वद्गण उपस्थित रहे। इसके अन्तर्गत संगोष्ठी की संयोजिका, प्रो. शशिप्रभा कुमार द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया एवं प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। इसके अनन्तर स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात, मेरठ द्वारा वीडियो के माध्यम से आशीर्वचन प्रदान किए गए। प्रो. शशिप्रभा कुमार द्वारा संगोष्ठी की संकल्पना प्रस्तुत की गयी। प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी द्वारा महर्षि दयानन्द के योगदान के विषय में सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इनके द्वारा महर्षि दयानन्द के काल को 'युगावधि काल' एवं 200वीं जयन्ती को 'युग पर्व' कहा गया। इन्होंने अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के तीन प्रमुख योगदानों की चर्चा की - गुरुकुल शिक्षा की पुन: प्रतिष्ठा, नारी शिक्षा एवं स्वराज मूल भारतराष्ट्र की रक्षा। इनके अनुसार लाल-बाल-पाल से पूर्व सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द द्वारा स्वराज की शिक्षा दी गयी एवं भारतीय ज्ञान परम्परा, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, विश्वगुरु आदि महत्त्वपूर्ण युगपरिवर्तक शब्दों से समाज को अवगत कराया गया। श्री अशोक प्रधान द्वारा महर्षि दयानन्द के वैदिक संस्कृति विषयक पक्ष पर अपने विचार अभिव्यक्त किए गए। इन्होंने कहा कि वर्तमान में हमें वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। इन्होंने महर्षि जी से प्रेरित होकर समाजकल्याण हेतु सर्वधर्म सद्भाव के साथ-साथ सर्वधर्म समभाव पर विशेष बल दिया। प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री द्वारा आचार्य शंकर एवं मूल शंकर के सामाजिक अवदान पर अपना उद्बोधन दिया गया। इन्होंने कहा कि 2500 वर्ष पूर्व आचार्य शंकर हुए, जिन्होंने भारत में चारों दिशाओं में चार वैदिक पीठों की स्थापना की। उसके 2300 वर्ष बाद मूल शंकर हुए, जिन्होंने वेद एवं भारतीय संस्कृति विषयक 20,000 से अधिक पृष्ठों का लेखन कर भारत को मूल संस्कृति से जोड़ा। स्वामी जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं कुरीतियों का निराकरण कर भारतीय समाज के लिए नवीन मार्ग प्रशस्त किए एवं वेदों को आम जनमानस से जोड़ा। प्रो. प्रतापानन्द झा द्वारा महर्षि दयानन्द के कार्यों का दो प्रकार से विभाजन किया गया- वेदों पर भाष्य की रचना और उन्हें समाज तक पहुँचाना। सत्र के अन्त में प्रो. झा द्वारा सभी विद्वद्गणों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

प्रथम सत्र- मध्याह्न 12:30-1:30 बजे

इस सत्र के अन्तर्गत कुल तीन वक्ता रहे - डॉ. वेदपाल, प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री, प्रो. कमलेश कुमार चौकसी। प्रथम वक्ता डॉ. वेदपाल द्वारा 'महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा, अजमेर का वेदविद्या में

योगदान' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि महर्षि जी द्वारा परोपकारिणी सभा की स्थापना वेद, वेदाङ्ग आदि के प्रचार-प्रसार एवं दीन-अनाथ के संरक्षण, पोषण व सुशिक्षा के कार्य आदि के उद्देश्य से की गयी। प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री द्वारा 'वेदभाष्यकार दयानन्द का वैशिष्ट्य एवं योगदान' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए गए। इन्होंने कहा कि स्वामी जी के अनुसार वेदों में मातृशक्ति के रूप में उषा आदि का उल्लेख किया गया है। अत: स्त्रियों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है। प्रो. कमलेश कुमार चौकसी द्वारा 'महर्षि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन- गोकरुणानिधि के आलोक में' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इन्होंने कहा कि पशु द्वारा अर्थोपार्जन के दो मार्ग हैं- हिंसात्मक एवं पालनात्मक। महर्षि दयानन्द ने पालनात्मक मार्ग को अर्थोपार्जन का श्रेष्ठ मार्ग माना है। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा स्वनिर्भर (सत्ताधारी पदार्थों पर निर्भरता) एवं आत्मनिर्भर (आत्मतत्त्वों पर निर्भरता) आदि शब्दों की भेदपरक व्याख्या कर, गोकरुणानिधि को इन दोनों आत्मतत्त्वों की कथा के रूप में निरूपित किया गया।

द्वितीय सत्र - मध्याह्न 2.15-3.40 बजे

इस सत्र में कुल तीन वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए- डॉ. सत्यपाल सिंह, पूर्व मंत्री भारत सरकार, डॉ. रञ्जन लता एवं डॉ. राज किशोर। डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि वेदों की महत्ता को पुनः स्थापित करने में दयानन्द स्वामी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वेद सनातन हैं और इस धरा पर ऐसा विषय नहीं है, जो वेदों में निहित न हो। इनके द्वारा वेदों की वैज्ञानिकता पर भी विशेष बल दिया गया। इनके अतिरिक्त डॉ. रञ्जन लता ने 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का निपात सम्बन्धी अनुशीलन (ऋग्वेद, शुक्ल यजुर्वेद, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) के विशेष सन्दर्भ में' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के अनुसार वेदों में एक ही निपात के विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग अर्थ होते हैं। डॉ. राज किशोर द्वारा 'वैदिक प्रकाशन संस्थान एवं उनका विवरण' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इन्होंने निर्णय सागर प्रेस, वैदिक पुस्तकालय, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द आदि प्रकाशन संस्थानों के विषय में विस्तृत चर्चा की।

तृतीय सत्र- मध्याह्न 3:55 - 5:20 बजे

इस सत्र में कुल छः वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने-अपने उद्बोधन दिए- डॉ. अभिजीत दीक्षित, सुश्री प्रज्ञा घोष, डॉ. कुलदीप कुमार, डॉ. विजेन्द्र सिंह, अश्विनी कुमार एवं डॉ. इन्द्रेश कुमार शुक्ल। डॉ. अभिजीत दीक्षित द्वारा 'पञ्चमहायज्ञों के आलोक में वैदिक यज्ञमीमांसा का अनुशीलन' विषय पर अपना उद्बोधन दिया गया। इन्होंने कहा कि महर्षि जी द्वारा अनिवार्य नित्य कर्म के रूप में पञ्चमहायज्ञों का विधान किया गया है। इनसे आत्मोत्थान, विश्वबन्धुत्व, परोपकार इत्यादि दैवीय गुणों का आधान होता है। प्रज्ञा घोष ने 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थप्रकाश में प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इन्होंने ईश्वर के स्वरूप के विषय में चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी जी ने ईश्वर का स्वरूप सगुण एवं निर्गुण दोनों माना है। डॉ. कुलदीप कुमार द्वारा 'संस्कृत व्याकरणाध्ययन में महर्षि दयानन्द का योगदान' पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इन्होंने कहा कि व्याकरण के क्षेत्र में मुख्य रूप से महर्षि जी के तीन योगदान हैं – आर्षक्रम से व्याकरण को अत्यन्त संक्षिप्त काल में अध्ययन करने योग्य बनाना, प्राच्य व्याकरण की धारा का पुन: परिष्कार एवं पुनरुद्दीपन

करना तथा व्याकरण से सम्बद्ध कुछ ग्रन्थ आविष्कृत करना। डॉ. विजेन्द्र सिंह ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में सृष्टि विद्या' विषय पर अपना शोधालेख प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि महर्षि जी ने वैदिक सृष्टि विद्या को प्रकाशित किया एवं सृष्टि के निर्माता रूप में ईश्वर को स्वीकार किया है। अश्विनी कुमार ने 'ऋषि दयानन्द से प्रभावित वेदानुयायी शिक्षण संस्थाएँ - पंजाब प्रान्त में' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इनके अनुसार पंजाब प्रान्त में महर्षि दयानन्द से प्रभावित विभिन्न शिक्षण संस्थान हैं, जिनके द्वारा वैदिक ज्ञान एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। डॉ. इन्द्रेश कुमार शुक्ल ने 'वेदभाष्यकार सायण एवं महर्षि दयानन्द' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि आचार्य सायण एवं उनके शिष्यों द्वारा किये गए वेदभाष्य प्रशंसनीय हैं परन्तु ऋषि दयानन्द एवं उनकी शिष्य परम्परा द्वारा किये गए वेदभाष्य ही वेदों के सत्यार्थ एवं यथार्थ के प्रकाशक हैं।

द्वितीय दिन- 16 फरवरी, 2024

प्रथम सत्र- प्रात: 10:30-11:45 बजे

इस सत्र में कुल चार वक्ताओं द्वारा अपने उद्‌बोधन प्रस्तुत गए- प्रो. वीरेन्द्र अलंकार, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. सुद्युम्नाचार्य एवं प्रो. ओमनाथ बिमली। प्रो. वीरेन्द्र अलंकार द्वारा विडियो के माध्यम से 'वैदिक अनुसन्धान एवं अध्ययन में ऋषि दयानन्द का योगदान' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए गए। इन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के अनुसार वैदिक सूक्तों में प्रयुक्त शब्दों के यास्काचार्यकृत निर्वचनों के आधार पर विभिन्न अर्थ हो सकते हैं, यथा ऋषि शब्द के अर्थ - अध्यापक, वेदों में पारंगत विद्वान्, तर्क, प्राण आदि। इनके अनन्तर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री द्वारा 'महर्षि दयानन्द से प्रभावित परवर्ती वेद भाष्यकार' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इनके द्वारा कहा गया कि 'पं. सत्यव्रत सामश्रमी, पं. मधुसूदन ओझा, प्रो. वासुदेव शरण अग्रवाल, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, महर्षि अरविन्द' आदि सभी विद्वान् महर्षि दयानन्द से प्रभावित थे। इनमें पं. सत्यव्रत सामश्रमी 'काशी शास्त्रार्थ' के लिपिकार थे, जिनके द्वारा सामवेद पर श्रेष्ठ कार्य किया गया। डॉ. सुद्युम्नाचार्य द्वारा 'वेद नित्यता और महर्षि दयानन्द' विषय पर अपना उद्‌बोधन दिया गया। इन्होंने कहा कि नित्यता दो प्रकार की होती है - एक कूटस्थ एवं दूसरी प्रवाहशील। किसी वस्तु का यथारूप में विद्यमान रहना कूटस्थ नित्यता कहलाती है, यथा- ईश्वर। जो वस्तु उत्पत्ति एवं विनाश के क्रम से निरन्तर विद्यमान रहती है, वह प्रवाहशील नित्यता के अन्तर्गत परिगणित होती है, यथा- वेदों की नित्यता। प्रो. ओमनाथ बिमली ने 'महर्षि दयानन्द की वैदिक एवं दार्शनिक दृष्टि' विषय पर अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के अनुसार संहिता भाग अथवा मन्त्र भाग ही वेद हैं। महर्षि जी की दार्शनिक दृष्टि के विषय में उन्होंने कहा कि स्वामी जी के अनुसार छ: दर्शनों में अविरोध है। इन्होंने इनमें परस्पर समन्वय स्थापित किया है।

द्वितीय सत्र- मध्याह्न 12:00-1:40 बजे

इस सत्र में कुल तीन वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर अपने उद्‌बोधन दिए गए- प्रो. सोमदेव शतांशु, प्रो. रामनाथ झा, प्रो. सुधीर कुमार आर्य प्रो. सोमदेव शतांशु ने 'वैदिक गुरुकुल एवं उनका योगदान' विषय पर अपना

उद्बोधन दिया। इन्होंने कहा कि राष्ट्रीय उत्थान के लिए आवश्यक सभी कार्यों में वैदिक गुरुकुलों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गुरुकुल परम्परा ने वेदों के विभिन्न भाष्यकार इस देश को प्रदान किए। वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रो. रामनाथ झा ने 'महर्षि दयानन्द के अनुसार वैदिकी ब्रह्मविद्या' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ब्रह्मविद्या आचार्य शंकर सम्मत ब्रह्मविद्या एवं आधुनिक विज्ञान सम्मत डायनेमिज्म सिद्धान्त (dynamism theory) के समान है। प्रो. सुधीर कुमार आर्य ने 'महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य में सामाजिक समरसता' विषय पर अपना उद्बोधन दिया। इन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता की दृष्टि से यजुर्वेद के 40वें अध्याय में उक्त दो मन्त्र महत्त्वपूर्ण हैं – 'यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति, सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते' एवं 'यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानत:, तत्र को मोह: क: शोक: एकत्वमनुपश्यतः'। इस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द द्वारा सभी प्राणियों के प्रति आत्मभाव की चर्चा की गयी है।

तृतीय सत्र- मध्याह्न 2.00-3.45 बजे

इस सत्र में कुल तीन वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर अपने उद्बोधन दिए- डॉ. प्रीति वर्मा, डॉ. छविकृष्ण आर्य एवं पं. विद्याप्रसाद मिश्र। डॉ. प्रीति वर्मा ने वीडियो के माध्यम से अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। डॉ. छविकृष्ण आर्य ने 'ऋषि दयानन्द का ऋग्वेदभाष्य में देव विवेचन' विषय पर अपना उद्बोधन दिया। इन्होंने कहा कि 'देव' शब्द का अर्थ करने हेतु स्वामी जी ने यास्क एवं पाणिनि के मत का समन्वय किया है। इनके अनुसार इन्द्र, विष्णु आदि देवतावाचक शब्दों का अर्थ लौकिक अर्थ से भिन्न है। इन्होंने देव शब्द के दस अर्थ (क्रीडा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, एवं गति) स्वीकार किए गए हैं- दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। पं. विद्याप्रसाद मिश्र ने 'महर्षि दयानन्द की परम्परा के अनुयायी व्यक्ति' विषय पर अपना उद्बोधन दिया गया। इन्होंने कहा कि पं. भगवत दत्त वेदालंकार, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी सत्यप्रकाश, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, पं. रामनाथ वेदालंकार, पं. विश्वनाथ वेदालंकार, आचार्य उदयवीर शास्त्री इत्यादि विभूतियों ने महर्षि दयानन्द के वेद यज्ञ में अपनी साहित्यिक आहुति प्रदान की।

चतुर्थ सत्र- मध्याह्न एवं सांयकाल 3.45-5.20 बजे

इस सत्र में कुल छ: वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए- डॉ. पूनम यादव, सुश्री आकृति ठाकुर, सुश्री सृष्टि असाटी, डॉ. विश्वबन्धु , डॉ. अरविन्द शर्मा एवं श्री रिपुञ्जय कुमार ठाकुर। डॉ. पूनम ने 'संस्कारविधि : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में' विषय पर, सुश्री आकृति ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में प्रतिपादित वैदिक उपासना विधि' विषय पर, सुश्री सृष्टि ने 'वेद और दयानन्द विषयक विस्तृत सन्दर्भ ग्रन्थ सूची' विषय पर, डॉ. विश्वबन्धु ने 'महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैदिक स्वर पर्यालोचना : एक विमर्श' विषय पर, डॉ. अरविन्द ने 'महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा भारतीय वास्तुविद्या के अन्तर्गत याननिर्माण विषयक चिन्तन' विषय पर एवं श्री रिपुञ्जय ने 'महर्षि दयानन्द के वैदिक चिन्तन में इतिहास दृष्टि' विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त किए।

समापन सत्र- सांय 5.30 -6.20 बजे

इस सत्र में आचार्य नन्दिता शास्त्री, प्रो. शशिप्रभा कुमार, पं. विद्याप्रसाद मिश्र, प्रो. प्रतापानन्द झा एवं प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ मञ्चासीन रहे। सत्र का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ द्वारा सभी विद्वानों एवं शोधार्थियों का स्वागत किया गया। प्रो. रवि प्रकाश आर्य द्वारा वीडियो के माध्यम से अपना उद्बोधन दिया गया। आचार्य नन्दिता शास्त्री द्वारा 'महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य में स्त्रियों की स्थिति' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। पं. विद्याप्रसाद मिश्र ने संगोष्ठी की सफलता एवं महर्षि दयानन्द के वेदविषयक चिन्तन के प्रचार-प्रसार हेतु कार्ययोजना के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रो. शशिप्रभा कुमार ने द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन पढ़ा एवं प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, प्रो. रमेश चन्द्र गौड़, पं. विद्याप्रसाद मिश्र द्वारा दिए गए सुझाओं का अनुमोदन किया गया। प्रो. प्रतापानन्द झा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए सुझावों का अनुमोदन किया गया। अन्त में शान्तिपाठ से संगोष्ठी का समापन हुआ।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव –

1. महर्षि दयानन्द के साहित्य को विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए।
2. प्रतिवर्ष आईजीएनसीए में महर्षि दयानन्द के वेदविषयक चिन्तन पर संगोष्ठी अथवा मेमोरियल लेक्चर का आयोजन किया जाए।
3. आईजीएनसीए में महर्षि दयानन्द वैदिक शोध संस्थान की स्थापना की जाए।
4. संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों का प्रकाशन किया जाए।
5. वैदिक हेरिटेज पोर्टल पर संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए सभी शोधपत्रों को वीडियो एवं पुस्तिका के रूप में डाला जाए।